

○ 01 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ○
⇒ TOTAL MARKS:- 100 ⇐

[[1]] होमवर्क (Marks: 5*4=20)

- >> *मीठ और राँयल बनकर रहे ?*
 - >> *पूरा पूरा ट्रस्टी बनकर रहे ?*
 - >> *पूर्वजपन की स्मृति द्वारा सर्व की पालना की ?*
 - >> *ज्ञान के अविनाशी धन से भरपूर रहे ?*

~~* कोई भी हिसाब-चाहे इस जन्म का, चाहे पिछले जन्म का, लग्न की अग्नि-स्वरूप स्थिति के बिना भस्म नहीं होता।* सदा अग्नि-स्वरूप स्थिति अर्थात् शक्तिशाली याद की स्थिति, बीजरूप लाइट हाउस, माइट हाउस स्थिति इस पर अब विशेष अटेंशन दो तब रहे हुए सब हिसाब-किताब पूरे होंगे।

A decorative horizontal pattern consisting of a sequence of small circles, a single star, and a single sparkle, repeated three times.

॥ 2 ॥ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

◦◦◦••☆••❖◦◦◦••☆••❖◦◦◦••☆••❖◦◦◦

◦◦◦••☆••❖◦◦◦••☆••❖◦◦◦••☆••❖◦◦◦

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

◎ *श्रेष्ठ स्वमान* ◎

◦◦◦••☆••❖◦◦◦••☆••❖◦◦◦••☆••❖◦◦◦

"मैं कमल पुष्प समान न्यारा और बाप का प्यारा हूँ"

~~◆ सदा अपने को कमल पुष्प समान न्यारे और बाप के प्यारे अनुभव करते हो? *क्योंकि जितना न्यारापन होगा उतना ही बाप का प्यारा होगा। चाहे कैसी भी परिस्थितियां हों, समस्यायें हों लेकिन समस्याओंके अधीन नहीं, अधिकारी बन समस्याओं को ऐसे पार करें, जैसे खेल-खेल में पार कर रहे हैं। खेल में सदा खुशी रहती है।* चाहे कैसा भी खेल हो, लेकिन खेल है तो कैसा भी पार्ट बजाते हुए अन्दर खुशी में रहते हो? चाहे बाहर से रोने का भी पार्ट हो लेकिन अन्दर हो कि यह सब खेल है। तो ऐसे ही जो भी बातें सामने आती हैं-ये बेहद का खेल है, जिसको कहते हो ड्रामा और ड्रामा के आप सभी हीरो एक्टर हो, साधारण एक्टर तो नहीं हो ना।

~~◆ तो हीरो एक्टर अर्थात् एक्यूरेट पार्ट बजाने वाले। तब तो उसको हीरो कहा जाता है। तो सदा ये बेहद का खेल है-ऐसे अनुभव करते हो? कि कभी-कभी खेल भूल जाता है और समस्या, समस्या लगती है। कैसी भी कड़ी परिस्थिति हो लेकिन खेल समझने से कड़ी समस्या भी हल्की बन जाती है। *तो जो न्यारा और प्यारा होगा वो सदा हल्का अनुभव करने के कारण डबल लाइट होगा। कोई बोझ नहीं। क्योंकि बाप का बनना अर्थात् सब बोझ बाप को दे दिया।* तो सब बोझ दे दिया है या थोड़ा-थोड़ा अपने पास रख लिया है? थोड़ा बोझ उठाना अच्छा लगता है। सब कुछ बाप के हवाले कर दिया या थोड़ा-थोड़ा जेबखर्च रख लिया है? छोटे बच्चे जेबखर्च नहीं रखते हैं। रोज उनको जेब खर्च देते हैं। खाओ-

पीयो, मौज करो। कोई भी चीज रखी होती है तो डाकू आता है।

~~◆ जब पता होता है कि ये मालदार हैं, कुछ मिलेगा तब डाका लगाते हैं। यदि पता हो कि कुछ नहीं मिलेगा तो डाका लगाकर क्या करेंगे। अगर थोड़ा भी रखते हैं तो डाकू माया जरूर आती है और वह अपनी चीज तो ले ही जाती है लेकिन जो बाप द्वारा शक्तियां मिली हैं वो भी साथ में ले जाती है। इसीलिये कुछ भी रखना नहीं है। सब दे दिया। *डबल लाइट का अर्थ ही है सब-कुछ बाप-हवाले करना। तन भी मेरा नहीं। ये तन तो सेवा अर्थ बाप ने दिया है। आप सबने तो वायदा कर लिया ना कि तन भी तेरा, मन भी तेरा, धन भी तेरा।* ये वायदा किया है कि तन तेरा है बाकी आपका है? जब तन ही नहीं तो बाकी क्या। तो सदा कमल पुष्प का दृष्टान्त स्मृति में रहे कि मैं कमल पुष्प समान न्यारी और प्यारी हूँ।



[[3]] स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

>>> *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*



रुहानी डिल प्रति

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएँ* ☆



~~♦ अपने ही दर्पण में अपने तकदीर की सूरत को देखो। यह जान अर्थात् नॉलेज दर्पण है। तो सबके पास दर्पण है ना तो अपनी सूरत देख सकते हो ना। *अभी बहुत समय के अधिकारी बनने का अभ्यास करो।* ऐसे नहीं अंत में तो बन ही जायेंगे। *अगर अंत में बनेंगे तो अंत का एक जन्म थोड़ा-सा राज्य कर लेंगे।*

~~◆ लेकिन यह भी याद रखना कि अगर बहुत समय का अब से अभ्यास नहीं होगा वा आदि से अभ्यासी नहीं बने हो, आदि से अब तक यह विशेष कार्यकर्ता आपको अपने अधिकार में चलाते हैं वा डगमग स्थिति करते रहते हैं अर्थात् धोखा देते रहते हैं, *दुःख की लहर का अनुभव कराते रहते हैं तो अंत में भी धोखा मिल जायेगा।*

~◆ धोखा अर्थात् दुःख की लहर जरूर आयेगी। तो अंत में भी पचाताप के दुःख की लहर आयेगी। इसलिए बापदादा सभी बच्चों को फिर से स्मृति दिलाते हैं कि *राजा बनो* और अपने विशेष सहयोगी कर्मचारी वा *राज्य कारोबारी साथियों को अपने अधिकार से चलाओ।* समझा।



॥ 4 ॥ रुहानी ड्रिल (Marks:- 10)

>>> *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रुहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*



~~♦ जैसे ब्रह्मा बाप ने साकार जीवन में कर्मातीत होने के पहले न्यारे और प्यारे रहने के अभ्यास का प्रत्यक्ष अनुभव कराया। जो सभी बच्चे अनुभव सुनाते हो - सुनते हुए न्यारे, कार्य करते हुए न्यारे, बोलते हुए न्यारे रहते थे। सेवा को वा कोई कर्म को छोड़ा नहीं लेकिन न्यारे हो लास्ट दिन भी बच्चों की सेवा समाप्त की। *न्यारापन हर कर्म में सफलता सहज अनुभव कराता है। करके देखो। एक घंटा किसको समझाने की भी मेहनत करके देखो और उसके अंतर में

15 मिनट में सुनते हुए, बोलते हुए न्यारेपन की स्थिति में स्थित होके दूसरी आत्मा को भी न्यारेपन की स्थिति का वायब्रेशन देकर देखो। जो 15 मिनट में सफलता होगी वह एक घंटे में नहीं होगी। यही प्रेक्टिस ब्रह्मा बाप ने करके दिखाई। तो समझा। क्या करना है!*

❖ ❖ ❖

]] 5]] अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

>> *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

❖ ❖ ❖

]] 6]] बाबा से रुहरिहान (Marks:-10)

(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

* "डिल :- ब्राह्मणों को देवताओं से भी जास्ती रायलटी से चलना"*

»» _ »» जीवन में जब भाग्य ने भगवान को प्रकट नहीं किया था... यह जीवन कितना बोझिल और अंधकार से भरा लक्ष्य हीन था.... अपने दुःख भरे अतीत की तुलना में, सुंदर सजीले वर्तमान को देख.... मैं आत्मा *मेरे जीवन को यूँ सुंदरता के रंगों से सजाने वाले... जादूगर बाबा की यादों में खो जाती हूँ...*. प्यारे बाबा ने पवित्रता के रंग में रंगकर, मुझ आत्मा को शिखर पर सजा दिया है... *शिव पिता और ब्रह्मा मां के आँगन में खिलने वाला खुबसूरत गुलाब मैं आत्मा.*.. ज्ञान और योग के पानी से निरन्तर गुणों... और शक्तियों की पंखुड़ियों से खिली मैं आत्मा... पूरे विश्व को अपनी रुहानियत की खशबू सराबोर कर रही हूँ...

* *मीठे बाबा ने मझ आत्मा को मेरे महान भाग्य के नशे में डबोते हए

कहा :-* "मीठे प्यारे फूले बच्चे.... *परमधाम से भगवान ने आकर, आप महोन बच्चों को अपनी आँखों का तारा बनाया है.*.. दुखों के कंटीले जंगल से बाहर निकाल, सुख भरी गोद में बिठाया है... निराकार और साकारी पिता की अनूठी पालना में पलने वाले सोभाग्यशाली हो... सदा इसी रायल्टी में रहो... क्योंकि ऐसा प्यारा भाग्य तो देवताओं का भी नहीं है..."

»→ _ »→ *मैं आत्मा ईश्वरीय पालना में सजे संवरे अपने महान भाग्य को देख पुलकित होते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे प्यारे बाबा... *मुझ आत्मा ने स्वयं भगवान को पा लिया है इससे प्यारी बात भला और क्या होगी.*.. आपने मेरे कौड़ी जेसे जीवन को, हीरे जैसा बेशकीमती बना दिया है... मैं आत्मा असीम सुखों की अनुभूतियों से भर गयी हूँ... अलौकिक और पारलौकिक पिता को पाने वाली... देवताओं से भी ज्यादा भाग्यशाली हूँ..."

* *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को सत्य ज्ञान से भरपूर करते हुए, और अपने सच्चे प्रेम की तरंगों से भरते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वरीय प्यार को पाकर, जो विकारों के काँटों से, दिव्य गुणों के फूल में परिवर्तित हुए हो... इन मीठी स्मर्तियों में सदा झूमते रहो... *अपनी रुहानियत भरी चाल से निराकार और साकार पिता की झ़लक... सारे विश्व को दिखाकर, सबको ईश्वरीय प्यार का दीवाना बनाओ*..."

»→ _ »→ *मैं आत्मा प्यारे बाबा की अमूल्य ज्ञान निधि से मन बुद्धि को शक्तिशाली बनते देख कहती हूँ :-* "मीठे दुलारे बाबा मेरे... आपके बिना तो मैं आत्मा इस विकारी दुनिया में अनाथों जैसा भटक रही थी... खुशियों के लिए सदा तरसती ही रही... आपने प्यारे बाबा मुझे पिता का प्यार देकर फिर से सनाथ बना दिया है... *ब्रह्मा अलौकिक पिता संग निराकारी पालना ने मुझे हीरों सा सजा दिया है*..."

* *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपने स्नोहिल आगोश में लेते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... आप देवताओं से भी ज्यादा खशनसीब हो जो..."

भगवान के साये में सम्मुख बेठ, तीनों लोकों और कालों को जान गए हो...
 निराकार और साकार दोनों का प्यार पाने वाले, देवताओं से भी ऊँचे भाग्य के धनी हो... सदा इस मीठी खुमारी में खोये रहो...

»* मै आत्मा मीठे बाबा के स्नेह में डूबी, अपने भाग्य पर मुस्कराते हुए कहती हूँ :-* "मीठे दुलारे मेरे बाबा... आपने आकर जीवन को मीठी बहारो सा सजाया है... मुझे देवताओं से भी ऊँच बनाकर, अपने गले लगाया है... वरदानों भरा हाथ मेरे सिर पर रखकर... मुझे सबसे खुशनसीब बनाया है... *ब्रह्मा मा के आँचल में और शिव पिता की छत्रछाया में पलने वाली मै आत्मा महानता से सज गयी हूँ...*. प्यारे बाबा से मीठी रुहरिहानं करके मै आत्मा... अपने कर्मक्षेत्र पर लौट आती हूँ..."

॥ 7 ॥ योग अभ्यास (Marks:-10)

(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

* "डिल :- श्रीमत पर पूरा - पूरा ट्रस्टी बनना है"

»* अपने सभी बोझ बाबा को देकर, लौकिक और अलौकिक हर जिम्मेवारी को ट्रस्टी हो कर सम्भालते, डबल लाइट स्थिति का अनुभव करते हुए मैं बाबा की याद में कर्मयोगी बन हर कर्म कर रही हूँ। *बाबा का आहवान कर, बाबा की छत्रछाया के नीचे स्वयं को अनुभव करते अपने सभी कार्य करने के बाद, मैं एकांत में अपनी पलकों को मूँदे अपने प्यारे मीठे बाबा की मीठी सी याद में जैसे ही बैठती हूँ* मुझे ऐसा आभास होता है जैसे मैं एक नन्हीं सी बच्ची बन बाबा की गोद में बैठी हूँ और बाबा बड़े प्यार से अपना हाथ मेरे सिर पर फिराते हुए, अपने नयनों में मेरे लिए अथाह प्यार समेटे हुए मुझे निहार रहे हैं।

»» हर बोझ से मुक्त, हर गम से अनजान सुंदर, सुहाने बचपन का यह दृश्य मेरे मन को आनन्द विभोर कर देता है। *अपनी पलकों को खोल अब मैं विचार करती हूँ कि जब हम ट्रस्टी के बजाए स्वयं को गृहस्थी समझते हैं तो कितने बोझिल हो जाते हैं किंतु ट्रस्टी हो कर जब सब कुछ सम्भालते हैं तो ऐसी बेफिक्र और निश्चिन्त स्थिति का अनुभव स्वतः ही होता है जैसी निश्चिन्त स्थिति एक बच्चा अपने पिता की गोद में अनुभव करता है*। संगमयुग पर परमात्म गोद में पलने का अनुभव कोटों में कोई और कोई में भी कोई कर पाता है, तो *कितनी पदमापदम सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जो स्वयं भगवान मेरे सारे बोझ ले कर, अपनी ममतामई गोद में बिठा कर स्वयं मेरे हर कार्य को सम्पन्न करवा रहा है*।

»» स्वयं से बातें करती, अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य की सराहना करती, अब मैं आत्मिक स्मृति में स्थित हो कर अपने सम्पूर्ण ध्यान को अपने भाग्यविधाता बाप की याद में एकाग्र करती हूँ और सेकण्ड में मन बुद्धि के विमान पर सवार हो कर, विदेही बन अपने विदेही बाबा से मिलने उनके धाम की ओर चल पड़ती हूँ। *देह से न्यारी इस विदेही अवस्था में मैं आत्मा ऐसा अनुभव कर रही हूँ जैसा सुखद अनुभव पिंजरे में बंद पँछी पिंजरे से निकलने के बाद अनुभव करता है*। ऐसे ही आजाद पँछी की भाँति उन्मुक्त होकर उड़ने का आनन्द लेते हुए मैं आत्मा पँछी अब आकाश को भी पार कर जाती हूँ। उससे और ऊपर फ़रिश्तों की आकारी दुनिया को पार करके अब मैं पहुँच जाती हूँ अपने शिव पिता के पास उनके धाम।

»» आत्माओं की इस निराकारी दुनिया में जहां चारों और चमकती हुई मणियों का आगार है ऐसी चैतन्य सितारों की जगमग करती अति सुंदर दुनिया परमधाम में पहुँच कर मैं असीम सुख की अनुभूति कर रही हूँ। *इस विदेही दुनिया में, विदेही बन, अपने बीच रूप परम पिता परमात्मा, संपूर्णता के सागर, पवित्रता के सागर, सर्वगुण और सर्व शक्तियों के अखुट भंडार, ज्ञान सागर, शिव बाबा के सम्मुख बैठ उनसे मंगल मिलन मनाने का यह सुख बहुत ही निराला है*। कोई संकल्प कोई विचार मेरे मन में नहीं है। एकदम निर्संकल्प अवस्था।

बस बाबा और मैं। *बीज रूप बाप के सामने मैं मास्टर बीज रूप आत्मा डेड साइलेंस की स्थिति का अनुभव करते हुए असीम अतीन्द्रिय सुखमय स्थिति में स्थित हूँ।

»» गहन अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करके, अब मैं अपने शिव पिता से आ रही सर्वशक्तियों को स्वयं में समाकर शक्तिशाली बन कर वापिस साकारी दुनिया में लौट रही हूँ। *अपने शिव पिता को हर पल अपने साथ रखते हुए अपने साकारी तन का आधार लेकर इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर मैं अपना पार्ट प्ले कर रही हूँ। लौकिक और अलौकिक हर कर्तव्य निमित पन की स्मृति में रह कर करते हुए, बेफिक्र बादशाह बन, अपने सभी बोझ बाबा को दे कर उड़ती कला का अनुभव अब मैं निरन्तर कर रही हूँ। करन करावन हार बाबा करवा रहा है यह स्मृति मुझे सदा निश्चिन्त स्थिति का अनुभव करवाती है। *ट्रस्टी होकर सब कुछ सम्भालते, हर पल, हर सेकण्ड स्वयं को परमात्म गोद में अनुभव करते मैं संगमयुग की मौजों का भरपूर आनन्द ले रही हूँ।

॥ 8 ॥ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5) (आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

- *मैं पूर्वजपन की स्मृति द्वारा सर्व की पालना करने वाली शुभ वृत्तिआत्मा हूँ।*
- *मैं मंसा शक्ति सम्पन्न आत्मा हूँ।*

»» इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

॥ 9 ॥ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)

(आज की मुरली के स्लोगन पर 'आधारित...')

- *मैं आत्मा जान का अविनाशी धन सदा पास रखती हूँ ।*
- *मैं आत्मा दुनिया में सबसे बड़ी सम्पत्तिवान हूँ ।*
- *मैं सदा सम्पन्न आत्मा हूँ ।*

➤➤ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

]] 10]] अव्यक्त मिलन (Marks:-10)

(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

* अव्यक्त बापदादा :-

» _ » *कई बच्चे कहते हैं हम तो बहुत सेवा करते हैं, बहुत मेहनत करते हैं लेकिन प्राप्ति इतनी नहीं होती है। उसका कारण क्या? वरदान सबको एक है, ६० साल वालों को भी एक तो एक मास वाले को भी एक है। खजाने सभी को एक जैसे हैं। पालना सबको एक जैसी है, दिनचर्या, मर्यादा सबके लिए एक जैसी है।* दूसरी-दूसरी तो नहीं है ना! ऐसे तो नहीं, विदेश की मर्यादायें और हैं, इण्डिया की और हैं, ऐसे तो नहीं? थोड़ा-थोड़ा फर्क है? नहीं है? तो जब सब एक है फिर किसको सफलता मिलती है, किसको कम मिलती है - क्यों? कारण? बाप मदद कम देता है क्या? किसको ज्यादा देता हो, किसको कम, ऐसे है? नहीं है।

» _ » फिर क्यों होता है? मतलब क्या हुआ? अपनी गलती है। *या तो बाड़ी-कान्सेस वाला मैं-पन आ जाता है, या कभी-कभी जो साथी हैं उन्हों की सफलता को देख ईर्ष्या भी आ जाती है। उस ईर्ष्या के कारण जो दिल से सेवा करनी चाहिये, वो दिमाग से करते हैं लेकिन दिल से नहीं।* और फल मिलता है

दिल से सेवा करने का। कई बार बच्चे दिमाग यूज करते हैं लेकिन दिल और दिमाग दोनों मिलाके नहीं करते। दिमाग मिला है उसको कार्य में लगाना अच्छा है लेकिन सिर्फ दिमाग नहीं। जो दिल से करते हैं तो दिल से करने के दिल में बाप की याद भी सदा रहती है। सिर्फ दिमाग से करते हैं तो थोड़ा टाइम दिमाग में याद रहेगा-हाँ, बाबा ही कराने वाला है, हाँ बाबा ही कराने वाला है लेकिन कुछ समय के बाद फिर वो ही मैं-पन आ जायेगा। *इसलिए दिमाग और दिल दोनों का बैलेन्स रखो।*

* ड्रिल :- "सेवा में दिमाग और दिल दोनों का बैलेन्स रखना"*

»_» मैं आत्मा चांदनी रात में एकांत में बैठी हुई हूँ... *ब्रह्मा बाबा की भृकुटि में विराजमान शिव बाबा के पास में सफेद प्रकाश का आकरी शरीर धारण किये धीरे-धीरे सूक्ष्मवत्तन में पहुँचती हूँ...* वहाँ चारों तरफ फूलों से सजावट है... जैसे ही मैं वहाँ पहुँचती हूँ, बाबा मुझ फरिश्ते पर फूलों की बरसात करना शुरू कर देते हैं...

»_» बाबा की दृष्टि से, मस्तक से निकलता लाल रंग की ठंडी किरणों का फव्वारा मुझ फरिश्ते पर पड़ रहा है... मैं किरणों से भीग चुकी हूँ...अनेक जन्मों के विकारों भरे संस्कार जलकर राख बन रहे हैं... *मैं अब सर्व गुणों का अनुभव कर रही हूँ...* विकार के वशीभूत देहअभिमान, ईर्ष्या, मेरापन सब समाप्त हो रहा है...

»_» बाबा मुझे लाल रंग का तिलक लगा रहे हैं... बाबा मुझे हीरों का बना ताज पहना रहे हैं... *मैं अब भूल चुकी हूँ कि देहअभिमान क्या होता है, मैं भूल चुकी हूँ ईर्ष्या क्या होती हैं... मैं भूल चुकी हूँ मेरापन क्या होता है...*

»_» अब मैं विकारों के वशीभूत देहअभिमान में नहीं आती हूँ... *जैसे ही मैं स्थूल या मन्सा सेवा करने लगती हूँ तो बाबा का लगाया हुआ लाल तिलक ही याद आता है... सब बाबा करा रहे हैं... मैं अब निमित भाव से हर कर्म कर

रही हूँ... केवल सेवा के लिए निमित्त हूँ...* मेरे जो साथी है उनकी सफलता देख मैं खुशी से झूम उठती हूँ... हर कर्म करते मुझे बाबा ही याद आ रहे हैं...

»* अब मैं दिल और दिमाग दोनों का बैलेंस रखकर देहीअभिमानी का अनुभव कर रही हूँ...* दिल से सेवा करने पर मैं दिलाराम बाप की सबसे स्नेही बच्ची बन चुकी हूँ... सभी आत्माएं मेरे इस अनुभव से बाबा की ओर आकर्षित हो रही हैं... मैं अब चढ़ती कला का अनुभव कर रही हूँ और सर्व को करा रही हूँ...

○_○ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि मैं सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चाट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

॥ अं शांति ॥
